# चित्तौड़गढ़ : परिचय व जैव विविधता

- चित्तौड़गढ़ जिला चित्तौड़ किला, मेनाल, सांवरिया मन्दिर एवं विजय स्तम्भ हेतु प्रसिद्ध है।
- जिले का क्षेत्रफल 7507.61 वर्ग किमी में से 2763.91 वर्ग किमी. वन क्षेत्र है। औसतन तापक्रम 0.2' से 46' से. व औसत वार्षिक वर्षा 706.5 मिमी. है। प्रमुख नदियां बनास एवं चम्बल हैं। जिले का अधिकांश भाग चम्बल, माही एवं बनास नदियों के जलग्रहण क्षेत्र में आता है। बनास, बेडच, गंभीरी, ब्राह्मणी, मेहाली, रीतम, सिवाना, खारी, कोठारी एवं गुंजली सहायक नदियां हैं। चित्तौड़गढ़ जिला समुद्रतल से औसतन 467 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इसका अधिकांश भू-भाग दक्षिण तटवर्ती और अरावली पर्वत श्रृंखलाओं से आच्छादित है। जिले में ''शुष्क उष्ण देशीय'' श्रेणी के वन पाये जाते हैं।
- चित्तौड़गढ़ जैव विविधता की दृष्टि से समृद्ध है। यहाँ 266 प्रजाति के पेड़, पौधे, आरोही क्षुप, लताएं एवं घास की प्रजातियाँ पाई जाती हैं। फंगस की 19 प्रजाति भी पाई जाती हैं। जिले में स्तनधारी वर्ग के 35; पक्षी वर्ग के 129; सरीसृप वर्ग के 27; मछली वर्ग के 20 एवं उभयचर वर्ग के 2 प्रकार के वन्यजीव पाये जाते हैं। 15 प्रकार की मकड़ियां भी पाई जाती हैं। वनों से तेंदुपत्ता, बांस, शहद, मोम, महुआ के फल-फूल एवं रतनजोत के बीज प्राप्त होते हैं।
- मुख्य खाद्य फसलों में ज्वार, गेहूं, मक्का, जौ, चना, उड़द, मसूर आदि शामिल हैं। तिलहनी फसलों में तिल, सरसों, अलसी, मूंगफली, सोयाबीन आदि शामिल हैं। फलों में आंवला, पपीता, अमरूद, नीबू, संतरा होते हैं। सब्जियों में बैंगन, प्याज, टमाटर, भिंडी, मैथी एवं लहसुन की मुख्य फसलें हैं। अजवायन, इसबगोल की भी पैदावार ली जाती है।
- 2011 की जनगणना के आधार पर जनसंख्या 1544392 हैं जिसमें पुरुष 784054 तथा महिलाएं 760338 हैं।
- जिले में पशुधन गणना 2007 के अनुसार कुल 7.61 लाख पशुधन है। मुख्य पशु, गाय एवं बैल - 91358, भैंस - 475112, भेड - 80829, बकरी - 674223, घोड़े एवं टट्टू - 1058, गधा/खच्चर - 1424, ऊंट - 2776 व सूअर - 6158 हैं।
- जैव विविधता संरक्षण प्रदान करने हेतु चल रही विभिन्न योजनाएं - 1. राजस्थान वानिकी एवं जैव-विविधता परियोजना, 2. वन विकास अभिकरण, 3. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्यक्रम, 4. राष्ट्रीय वेम्बू मिशन व 5. तेरहवें वित्त आयोग के तहत वन सम्पदा का संरक्षण।
- यहाँ के जैविक अवयवों पर आधारित उद्योग खाद्य उत्पादन एवं पेय निर्माण, वस्त्र निर्माण कार्य, लेदर लगेज हैण्ड बैग एवं फुटवेयर निर्माण व वुड एण्ड प्रोडक्ट्स ऑफ वुड वर्क प्रमुख है।

# बोर्ड की गतिविधियाँ

(जैव विविधता अधिनियम, 2002 की धारा 22 के प्रावधानानुसार, राजस्थान सरकार द्वारा राज्यादेश क्रमांक प.4(8) वन/2005/पार्ट-I जयपुर, दिनांक 14 सितम्बर, 2010 से राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड की स्थापना की गई।)

❊ अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस समारोह का आयोजन

❊ जैव विविधता विषयक सामग्री का प्रकाशन

❊ कार्यशाला, प्रशिक्षण शिविर, इको-क्लब/ बी.एम.सी. सदस्यों का भ्रमण आयोजन

❊ जैव विविधता प्रबंध समितियों का गठन व लोक जैव विविधता पंजिका तैयार करना

❊ जैविक संसाधनों का संरक्षण
❊ जैव विविधता विरासतीय स्थलों का चयन एवं अधिसूचित
❊ जैव सम्पदा के व्यवसायिक उपयोग का स्टेटस सर्वे
❊ प्रोत्साहन वर्धन

**माता भूमिः पुत्रोऽह पृथिव्याः**

भूमि माता है, समस्त जीव इसके अवयव हैं, हम पृथ्वी पुत्र हैं।
इसका संरक्षण, संवर्धन व सतत् उपयोग करना हमारी कर्तव्य परायणता है।

# जैव विविधता : चित्तौड़गढ

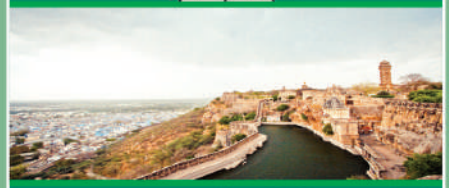

## राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड

7, द्वारिकापुरी, जमना लाल बजाज मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर

# जैव विविधता

पृथ्वी पर पाये जाने वाले जीवन के पृथक-पृथक रूप ही जैव विविधता है। समृद्ध जैव विविधता बहुत कुछ प्रदान करती है, यथा भोजन, औषधियाँ, वस्त्र, आवास, आमोद-प्रमोद के साधन, सांस्कृतिक, शोध के अवसर, उद्योगों के लिये कच्चा माल और बहुत कुछ।

## चित्तौड़गढ़ की समृद्ध जैव विविधता

आवास

औषधियाँ

उद्योग के लिए कच्चा माल

भोज्य पदार्थ

सांस्कृतिक

आमोद-प्रमोद

सब कुछ देती जैव विविधता। सतत् उपयोग से बनी रहेगी समरसता।।
अत: जैव विविधता संरक्षण हेतु हम आज ही शपथ लेवें।

## जैव विविधता पर बढ़ते संकट

✲ आनुवंशिक विविधता में कमी व निम्नीकरण

लुप्त प्रजाति

प्रजाति में होता क्षरण

✲ आवास विखंडन

✲ प्राकृतिक संसाधनों का अति उपभोग

✲ विदेशी प्रजातियों का प्रसार

✲ जलवायु परिवर्तन

✲ मरुस्थलीय प्रसार

✲ भूउपयोग परिवर्तन

✲ विकास परियोजना का प्रभाव

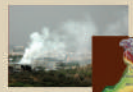

70% भूभाग का जैव विविधता सर्वेक्षण ही हुआ है 46000 पादप व 89000 जन्य प्रजातियों का पता लगा है, लगभग 4 लाख प्रजातियां हैं।

✲ प्राकृतिक आपदा

✲ जैव विविधता सूचना का अभाव

आओ हम सब, हमारे व आने वाली पीढियों के लिये,
जैव विविधता का संरक्षण, संवर्धन व सतत उपयोग करें।

## जैव विविधता संरक्षण व सुधार के उपाय

स्थानिक प्रजातियों को बढ़ावा देना

विदेशी प्रजातियों का उन्मूलन

जैविक खाद व कीटनाशक का प्रयोग

जैविक संघटकों का सतत उपयोग

अक्षय ऊर्जा का उपयोग

वन्य जीवों का संरक्षण

वनों का संरक्षण

जैव विविधता सूचना का प्रत्येक स्तर पर संकलन करना

अब भी समय है, हम हमारी जैव विविधता को संकट मुक्त कर
आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित करें।